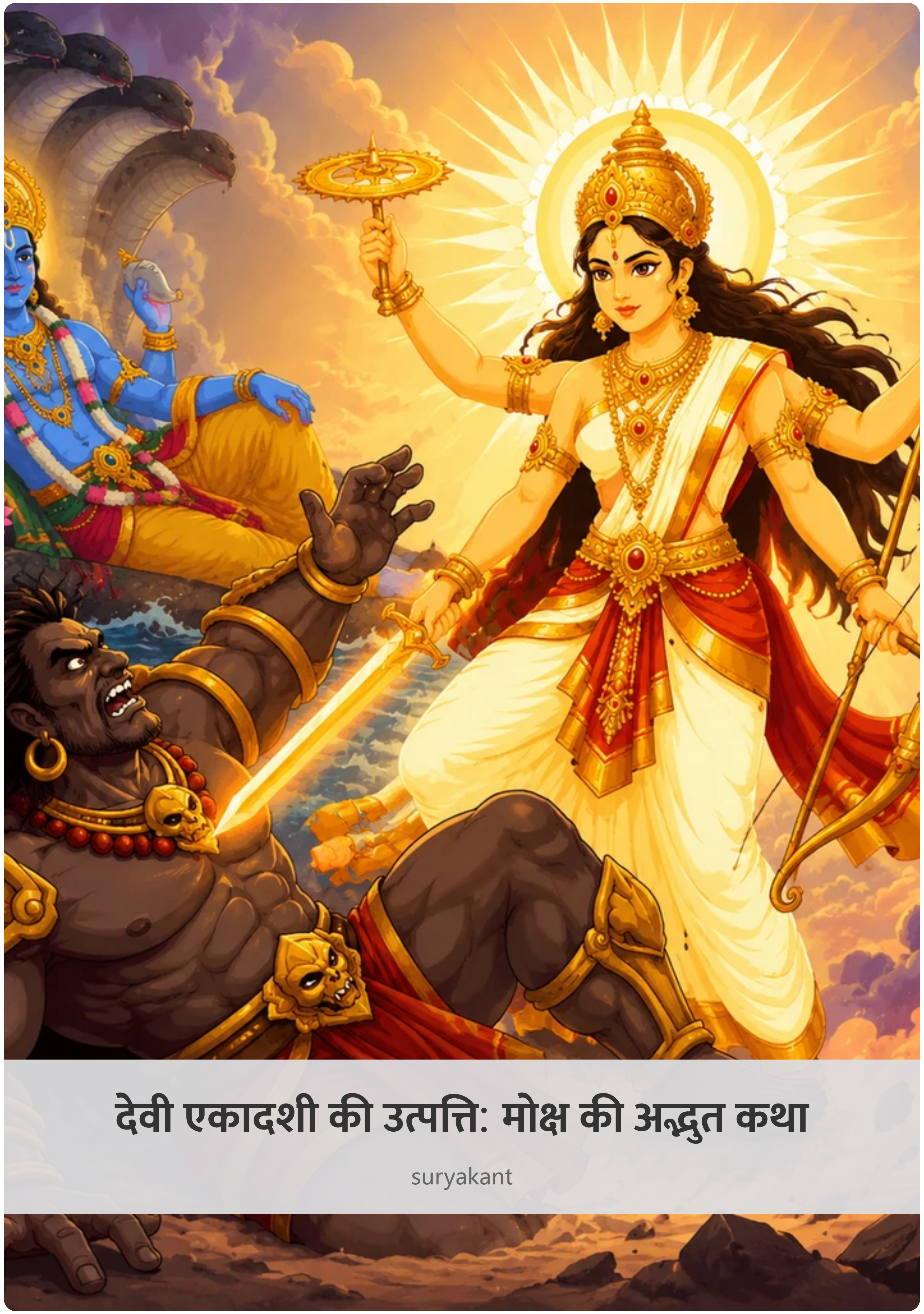

देवी एकादशी की उत्पत्ति: मोक्ष की अद्भुत कथा

suryakant

बहुत समय पहले, मुरा नाम का एक अत्यंत शक्तिशाली और क्रूर राक्षस था जिसने अपनी आसुरी शक्तियों से देवताओं को पराजित कर दिया। उसने स्वर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया, जिससे सभी देवता भयभीत होकर इधर-उधर भटकने लगे।

डरे हुए देवता देवराज इंद्र के नेतृत्व में भगवान शिव के पास कैलाश पर्वत पहुँचे और अपनी व्यथा सुनाई। महादेव ने उन्हें शांत किर और सुझाव दिया कि केवल भगवान विष्णु ही इस संकट से उन्हें मुत्ति दिला सकते हैं।

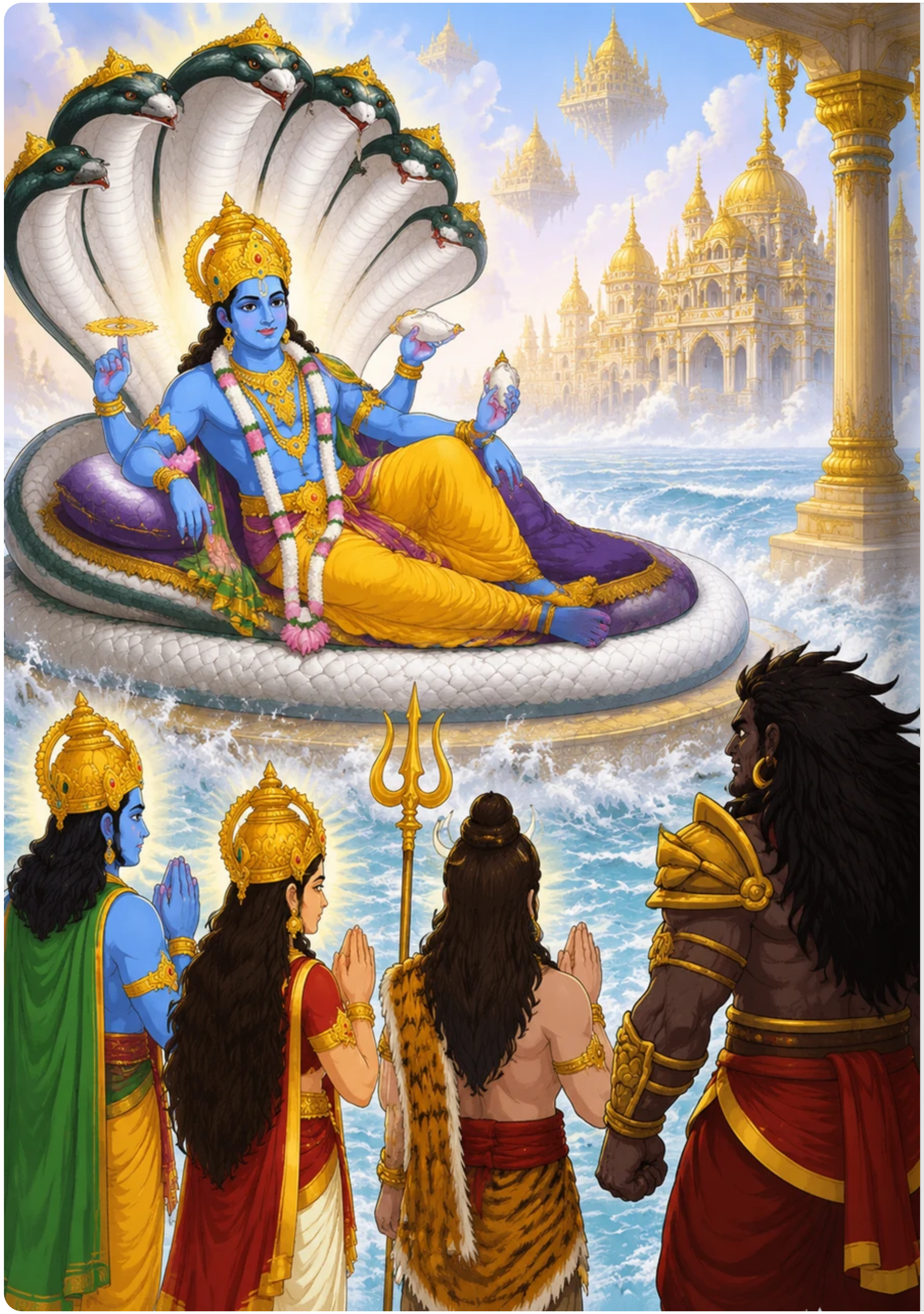

सभी देवता वैकुंठ धाम पहुँचे और क्षीर सागर में शेषनाग पर विराजमान भगवान विष्णु से रक्षा की गुहार लगाई। दयालु भगवान विष ने देवताओं को आश्वासन दिया और दुष्ट मुरा का विनाश करने का वच दिया।

भगवान विष्णु अपने दिव्य वाहन गरुड़ पर सवार होकर मुरा कि राजधानी चंद्रावती की ओर प्रस्थान कर गए। उनके हाथों में सुदर्शन च गदा और शंख सुशोभित थे, और उनका तेज दसों दिशाओं में फैल रह था।

चंद्रावती के युद्धक्षेत्र में देवताओं और राक्षसों के बीच एक भीषण संग्राम छिड़ गया। भगवान विष्णु ने अपने पराक्रम से राक्षसों की विशा सेना का संहार कर दिया, जिससे मुरा के पैर उखड़ने लगे।

अंत में मुरा स्वयं युद्ध के लिए सामने आया और भगवान विष्णु
साथ उसका द्वंद्व हजारों वर्षों तक चलता रहा। दोनों ओर से दिव्य अस
का प्रयोग हुआ, जिससे पूरा ब्रह्मांड कांपने लगा और अंततः विष्णु ने
विश्राम करने का विचार किया।

युद्ध से थककर भगवान विष्णु बद्रिकाश्रम की एक गुफा में विश्रा करने चले गए और गहरी निद्रा में लीन हो गए। अधर्मी मुरा उनका पीछ करते हुए गुफा तक पहुँच गया और सोते हुए भगवान पर प्रहार करने लिए तलवार उठा ली।

जैसे ही मुरा आक्रमण करने वाला था, भगवान विष्णु के शरीर
एक अत्यंत तेजस्वी, सुंदर और शस्त्रों से सुसज्जित देवी प्रकट हुईं।
उनका दिव्य और क्रोधित रूप देखकर राक्षस मुरा भी एक पल के लि
स्तब्ध रह गया।

देवी ने मुरा को युद्ध के लिए ललकारा और कुछ ही क्षणों में उस सभी अस्त्र-शस्त्र नष्ट कर दिए। अंततः देवी ने अपने त्रिशूल से उस अहंकारी राक्षस का वध कर दिया और देवताओं को उसके आतंक से मुक्त कराया।

जब भगवान विष्णु की निद्रा टूटी, तो उन्होंने देवी को सामने खड़
पाया और उन्हें 'एकादशी' नाम दिया। उन्होंने वरदान दिया कि जो भी इ
पवित्र दिन पर व्रत रखेगा, उसे पापों से मुक्ति और अंत में मोक्ष की प्राि
होगी।